9

dkjd foHkfDr;k¡

प्रिय शिक्षार्थी, पूर्व पाठ में आपने हमारी महान पर्वतमाला हिमालय के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप कारक विभक्ति के बारे मे जानेंगे। संस्कृत में सात कारक विभक्तियाँ होती हैं। इनमे से षष्टी–विभक्ति का क्रिया के साथ संबंध नही होने से कारक मे नहीं गिना जाता है। इस तरह संस्कृत में छः कारक होते हैं। इस पाठ मे हम कारक विभक्तियों को अभ्यास वाक्यों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- कारक विभक्तियों को समझ पाने में; और
- वाक्य में कारक विभक्तियों की पहचान कर पाने में।

9.1 ewy ikB

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणम् इत्याहुः कारकाणि षट् ।। इति।।

वाक्य में क्रिया की सिद्धि जिससे होती है उसे कारक कहते हैं अर्थात क्रिया की जनकता को कारक कहते हैं–क्रियाजनकत्वां कारकत्वम्।

- **çFkek foHkfä% vFkkZr~ dÙkkZ dkjd&** क्रिया को स्वतन्त्र रूप से करने वाले को कर्त्ता कहते हैं "स्वतन्त्रः कर्त्ता"।

Ø-l	,dopu	f}opu	cgqopu
1	एषः पर्वतः अस्ति।	एतौ पर्वतौ स्तः	एते पर्वताः सन्ति।
2	एषा महिला अस्ति।	एते महिले स्तः	एताः महिलाः सन्ति।
3	एतत् गृहम् अस्ति।	एते गृहे स्तः	एतानि गृहाणि सन्ति।
4	रामः पुस्तकं पठति।	रामौ पुस्तकं पठत	रामान् पुस्तकं पठन्ति

यहाँ पर चतुर्थ वाक्य में पठति क्रिया को करने वाला राम है अतः राम कर्ता कारक है।

dkjd foHkfDr;k

- **f}rh;k foHkfä% vFkkZr~ deZ dkjd&** क्रिया की पूर्णता में कर्ता के सर्वाधिक अभीष्ट को कर्म कहते हैं।

Ø-	,dopue	f}opue	cgqopue
1	अहं चित्रं लिखामि	आवां चित्रं लिखावः	वयं चित्रं लिखामः
2	त्वं मेघं पश्यसि	युवां मेघं पश्यथः	यूयं मेघं पश्यथ
3	छात्रः फलं खादति	छात्रौ फलं खादतः	छात्राः फलं खादन्ति

यहाँ प्रथम वाक्य में लिखामि, लिखावः लिखामः क्रिया के सम्पादन में कर्ता अहं, आवां वयं के लिए सर्वाधिक अभीष्ट चित्रम् है अतः चित्रम् में कर्मकारक है।

- **r`rh;k foHkfä% vFkkZr~ dj.k dkjd&** क्रिया की सिद्धि में कर्त्ता के प्रमुख सहायक को करण कारक कहते हैं।

Ø-l-	,dopue	f}opue	cgqopue
1	सः हस्तेन पत्रं लिखति	तौ हस्तेन पत्रं लिखतः	ते हस्तेन पत्रं लिखन्ति
2	त्वं यानेन गृहं गच्छसि	युवां यानेन गृहं गच्छथः	यूयं यानेन गृहं गच्छथ
3	अहं मित्रेण सह क्रीडामि	आवां मित्रेण सह क्रीडावः	वयं मित्रेण सह क्रीडामः

यहाँ प्रथम वाक्य में लिखति क्रिया का प्रमुख सहायक हस्त है अतः "हस्तेन" में करण कारक है।

- **prqFkhZ foHkfä vFkkZr lEiznku dkjd &** जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य सम्पादित किया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं।

Ø-la	,dopu	f}opu	cgqopu
1.	शिक्षकः छात्राय पुस्तकं यच्छति	शिक्षकौ छात्राय पुस्तकं यच्छतः	शिक्षकाः छात्राय पुस्तकं यच्छन्ति
2.	त्वं भिक्षुकाय धनं यच्छसि	युवां भिक्षुकाय धनं यच्छथः	यूयं भिक्षुकाय धनं यच्छथ
3.	अहं गुरवे फलं नयामि	आवां गुरवे फलं नयावः	वयं गुरवे फलं नयामः

यहाँ पर उपरोक्त दुसरे वाक्य "त्वं भिक्षुकाय धनं यच्छसि" में भिक्षुक को धन दिया जा रहा है अतः भिक्षुकाय में चतुर्थ विभक्ति अर्थात सम्प्रदान कारक है।

- **i¥peh foHkfä vFkkZr viknku dkjd &** जिस किसी से कोई वस्तु अलग होती है वहाँ पर जिससे अलग हो रही है उसमें पञ्चमी विभक्ति अर्थात् अपादान कारक होता है। "वृक्षात् पत्राणि पतन्ति" इस वाक्य में वृक्ष से पत्ते अलग हो रहे हैं अतः वृक्षात् में अपादान कारक है।

- **"k"Vh foHkfä% vFkkr vf/kdj.k dkjd &** संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु का दुसरी वस्तु से संबंध बताने के लिए षष्टी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। अर्थात शब्द के जिस रूप से एक का दुसरे से संबंध का पता चले उस संबंध कारक कहते है और वहां षष्टी विभक्ति का प्रयोग होता है।

  नीचे दिये गये अव्यय पदों के साथ षष्टी विभक्ति का प्रयोग होता है–

mnkgj.k okD;

उपरि, समीपे, कृते, समक्षम, अग्रे, पुरतः, अधः, दक्षिणतः, उत्तरतः

देवांगसय पिता चिकित्सकः अस्ति

नद्याः जलम् आनय

सः पर्वतस्य उपरि निवसति

मम समीपे हितेशः उपविशति

मातुः कृते औषधम् आनयामि

सीतायाः अग्रे श्री रामः चलति

वृक्षस्य अधः धेनवः तिष्ठन्ति

लतायाः गानं मधुरम् अस्ति

मम भ्रातुः सेवकार्यं प्रशंसनीयम् अस्ति

- **lIreh foHkfä% vFkkZr vf/kdj.k dkjd &** क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं।

  जनकः आसने तिष्ठति" – यहाँ पर तिष्ठति क्रिया का आधार आसन है अतः आसने में सम्तमी विभक्ति अर्थात अधिकरण कारक है।

क्रियाकलाप

नीचे दी गई तालिका में सभी विभक्तियों के एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन के वाक्यों का निर्माण कीजिए

foHkfDr	**,dopue~**	**f}opue~**	**cgqopue~**
प्रथमा विभक्ति			
द्वितीय विभक्ति			
तृतीया विभक्ति			
चतुर्थ विभक्ति			
पंञ्चमी विभक्ति			
षष्टी विभक्ति			
सप्तमी विभक्ति			

ikBxr iz'u& 9-1

1. निम्नलिखित का एक शब्द में उत्तर दीजिए–

   I. गतवान् इति पदं किं प्रत्यययुक्तम्।

   II. खादितः काः धातुः।

2. नीचे दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

   (i) लेखितव्यां ________________ प्रत्ययः।

   (ii) कारकं नाम ________________।

   (iii) कारकं ________________ विधम्।

   (iv) बालः पठति इति ________________ कारकम्।

vkiu D;k lh[kk

- कारक विभक्तियों के विषय में ज्ञान।
- कारक की परिभाषा और कारक ज्ञान।
- उदाहरणों के माध्यम से कारक विभक्तियों का ज्ञान।

ikBkr iz'u

1. निम्नलिखित का संस्कृत में उत्तर लिखिए–

   (i) सम्प्रदानकारकस्य उदाहरणं लिखत।

   (ii) "पुरुषाय वाहनं ददाति" किं कारकम्।

   (iii) करणकारकस्य उदाहरणं लिखत।

   (iv) अधिकरण कारक रूप उदाहरणं लिखत।

2. नीचे दिये गये विभक्ति तथा वचन के अनुसार वाक्यों का निर्माण कीजिए–

   (i) प्रथमा विभाक्ति, एकवचन .... ।

   (ii) द्वितीय विभाक्ति, बहुवचन .... ।

   (iii) तृतीय विभाक्ति, द्विवचन .... ।

   (iv) चतुर्थी विभाक्ति, बहुवचन .... ।

   (ii) पञ्चमी विभाक्ति, एकवचन .... ।

   (iii) षष्टी विभाक्ति, द्विवचन .... ।

   (iv) सप्तमी विभाक्ति, एकवचन .... ।

mÙkjekyk

9.1

1. I. क्तवतु,

   II. खाद्

2. (i) तव्य

   (ii) क्रियान्वयी

   (iii) षट्

   (iv) कर्तृ